ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

कांगड़ा लघु चित्रों में नल–दमयन्ती का साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

Nal-Damayanti's Literary Perspective in Kangra Miniatures

Paper Submission: 10/01/2021, Date of Acceptance: 25/01/2020, Date of Publication: 26/01/2021

सोनाली गुप्ता
शोध छात्रा,
ड्राइंग और पेंटिंग, कला संकाय, दयालबाग शैक्षिक संस्थान, डीम्ड विश्वविद्यालय
दयालबाग, आगरा, भारत

सारांश

मनुष्य अपनी विचारधारा में व्यवस्था चाहता है, इसी व्यवस्था को कला की भाषा में प्रबन्धात्मकता अथवा संयोजन कहते हैं। एक अच्छे संयोजन में विविधता में एकता होती है। विविधता की दृष्टि से संयोजनात्मक तत्वों को व्यवस्थित करके कलाकार एकता स्थापित करता है यानि संयोजन करता है। जिस तरह लेखन कार्य के मूल तत्व शब्द, वाक्य, भाव आदि होते हैं ठीक उसी प्रकार दृश्य कला की प्रत्येक विधा (स्थापत्य, चित्रकला, मूर्तिकला एवं जनजातीय कला आदि) के भी मूल तत्व होते हैं, जिनके अभाव में कोई भी कलाकृति अधूरी प्रतीत होती है। संयोजन की दृष्टि से कलाकृति का प्रत्येक भाग महत्वपूर्ण होता है। यही संयोजन के तत्व हमें कांगड़ा शैली के नल–दमयन्ती लघु चित्रों में भी परिलक्षित होते हैं।

काव्य का चित्रकला में रूपांतर ही संयोजन के तत्वों के साथ कांगड़ा शैली का अद्वितीय गुण है। काव्य की पीठिका में प्रवाहमान, अनुपात, संतुलन व लयात्मक रेखाओं ने कांगड़ा कलम को गति दी है। इन चित्रों को देखकर सहज ही मधुर संगीत कहा जा सकता है। यह वह कला है जो मन को सुखकर प्रतीत होती है और आत्मा को ऊँचा उठाती है। मैं नल–दमयन्ती कथानक के चित्रों को उपरोक्त संयोजनात्मक आधार पर उनका विश्लेषण करने का प्रयास करूँगी।

Man wants a system in his ideology, this system is called management or combination in the language of art. A good combination consists of unity in diversity. The artist establishes unity by arranging compositional elements in terms of diversity. Just as the basic elements of the writing work are words, sentences, expressions etc., in the same way, every genre of visual arts (architecture, painting, sculpture and tribal art etc.) also has its basic elements, in the absence of which any artwork would seem incomplete. is. Each part of the artwork is important in terms of composition. Elements of this combination are also reflected in the Kangra style Nal-Damayanti miniatures. The adaptation of poetry into painting is a unique feature of the Kangra style with elements of composition. Flows, proportions, balance and lyrical lines in the pedestal of poetry have given the Kangra pen a momentum. Seeing these pictures can easily be called melodious music. This is the art that appears to be pleasing to the mind and elevates the soul. I will try to analyze the pictures of Nal-Damayanti story on the above objective basis.

मुख्य शब्द : कांगड़ा, भारतीय, शैली, लघु, चित्रो, महत्व, पहाड़ी, नल–दमयन्ती, चित्रकला।
Kangra, Miniature, Paintings, Nal-Damayanti, Painting.

प्रस्तावना

प्राचीन काल में नाट्यशालायें, देव मंदिर एवं राजभवनों के बाहरी व भीतरी प्रकोष्ठों की दीवारों पर चित्रांकन किया जाता था। वैदिककालीन, बौद्धकालीन, विनयपिटक, संयुक्त निकाय, रामायण, शिल्परत्नम मेघदूत, रघुवंश, कादम्बरी आदि अन्य लिखित सामग्री से ज्ञात होता है कि भित्ति चित्रण सारे देश में व्याप्त थे। इसके उपरान्त जैन पोथी चित्रों एवं ताड़पत्रीय लघु चित्रों ने एक युग का सूत्रपात किया था जो आगे चलकर मालवा चित्रों के रूप में विकसित हुए। मुगलों के आगमन के साथ ईरानी शैली की बारीकि एवं नफासत लिए चित्रों ने प्रारम्भिक मालवा चित्रों के साथ मिलकर अनेक स्थानीय विशेषताओं से

युक्त विभिन्न शैलियों को जन्म दिया और इसी प्रकार हम यह मान सकते हैं कि यह लघु चित्रों का आरम्भिक काल था।

जयदेव के गीत–गोविन्द, बिहारी सतसई, केशवदास व मतिराम की रचनाओं व भगवत् पुराण से प्रेरित चित्रकारों ने थोड़े ही समय में हजारों की संख्या में चित्र बनाकर एक चमत्कार कर दिखाया। राग–रागिनियों, नायक–नायिका भेद तथा समस्त श्रृंगारिक क्रियायें पहाड़ी कलम की उभरती देह–यष्टि में समाई हुई थी। रेखाओं की कोमलता व एक नये तल–विन्यास ने पहाड़ी कलम को मौलिकता प्रदान की है। लघु चित्रों की सौंदर्यात्मक पद्धति उच्च कोटि की है। यह कृतियां भारतीय कला का गौरव बढ़ाने वाली हैं।

विभिन्न रस, कलात्मक एवं सौंदर्यात्मक गुणों से युक्त इन लघु चित्रों का अध्ययन अवश्य ही कला के नये आयाम स्थापित करेगा जो भविष्य में शोधार्थियों और इस विषय से संबंध रखने वालों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिए कि वह किस उद्देश्य से शोध कर रहा है। किसी भी शोध का कार्य एक महत्वपूर्ण तथ्य की खोज करना है चाहे वह प्रयोगात्मक हो या सैद्धांतिक।

पहाड़ी लघु चित्रों में कांगड़ा शैली की विवेचना करना व प्रकाश में लाना मेरा उद्देश्य होगा। कांगड़ा शैली में चित्रित नल–दमयन्ती पर आधारित चित्रण साहित्यिक परिप्रेक्ष्य को सबके समक्ष लाना मेरा उद्देश्य होगा। विभिन्न पहाड़ी शैली की पुस्तकों में से नल–दमयन्ती पर हुए कार्य को अपने शोध द्वारा एक सूत्र में बांधना भी मेरा उद्देश्य होगा। नल–दमयन्ती कृतियों का सौंदर्यात्मक अध्ययन करना ही मेरे शोध का मुख्य उद्देश्य है जो भविष्य में शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।[1]

साहित्यावलोकन

किसी भी विषय पर शोधकार्य करने से पहले उससे संबंधित तथ्यों का संकलन आवश्यक होता है। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण शोध कार्य पर पूर्ववत् में किया गया शोध या उससे संबंधित साहित्य महत्वपूर्ण होता है जिसका पुनरावलोकन करके वर्तमान शोध को सारगर्भित एवं उपयोगी बनाया जा सकता है।

मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण तथा महत्वपूर्ण बनाने के लिए कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों और साहित्यों का अध्ययन किया जैसे 'बी.एन. गोस्वामी' द्वारा लिखित 'Pahari Painting of the Nal Damyanti Theme' जिसमें मैंने नल–दमयन्ती के लघु चित्रों को बारीकी से देखा तथा इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इसके अतिरिक्त मैंने 'गोस्वामी' की एक और रचना 'Pahari Masters, Court Painters of Northern India' का अध्ययन किया। जिसमें मैंने पहाड़ी कलाकारों तथा उनके रंग बनाने के तरीकों व प्राचीनता को जाना व समझा जिससे मुझे पहाड़ी चित्रकला के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई।'नल–दमयन्ति की हिन्दी अनुवादित कथा' का अध्ययन कर नल–दमयन्ती की प्रेम कथा को समझा व संबंधित जानकारी प्राप्त किया।

किसी भी देश का साहित्य उस समाज की तत्कालीन स्थिति का दर्पण होता है। यह साहित्य ही समाज की अमर धरोहर है। विभिन्न राजवंशों ने भारत में मूर्तिकला, स्थापत्य एवं चित्रकला का बहुमुखी विकास किया जिसका आधार देश के अनेक धर्म, मतमतान्तर एवं नित–नवीन विकसित सम्प्रदाय हैं।

प्राचीन काल में नाट्यशालायें, देव मंदिर एवं राजभवनों के बाहरी व भीतरी प्रकोष्ठों की दीवारों पर चित्रांकन किया जाता था। वैदिककालीन, बौद्धकालीन, विनयपिटक, संयुक्त निकाय, रामायण, शिल्परत्नम मेघदूत, रघुवंश, कादम्बरी आदि अन्य लिखित सामग्री से ज्ञात होता है कि भित्ति चित्रण सारे देश में व्याप्त थे। इसके उपरान्त जैन पोथी चित्रों एवं ताड़पत्रीय लघु चित्रों ने एक युग का सूत्रपात किया था जो आगे चलकर मालवा चित्रों के रूप में विकसित हुए। मुगलों के आगमन के साथ ईरानी शैली की बारीकि एवं नफासत लिए चित्रों ने प्रारम्भिक मालवा चित्रों के साथ मिलकर अनेक स्थानीय विशेषताओं से युक्त विभिन्न शैलियों को जन्म दिया और इसी प्रकार हम यह मान सकते हैं कि यह लघु चित्रों का आरम्भिक काल था।

लघु चित्र बनाने की रूचि फैलते–फैलते पूरे भारत में फैल गई जिसमें मुगल, राजस्थानी व पहाड़ी प्रमुख शैलियां रहीं जिसमें मैं पहाड़ी शैली की विवेचना करूँगी। पहाड़ी चित्रकला लगभग 15000 वर्ग मील के क्षेत्र में फैली हुई है। पहाड़ी लोगों के गुणों को सदा ही अनेक विद्वानों ने सराहा है। यह लोग वीर, परिश्रमी, धार्मिक, मिलनसार, ईमानदार व साहित्य और संस्कृति के प्रेमी होते हैं। पहाड़ी चित्रकला की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यंत सम्पन्न है। पहाड़ी चित्रकला में काव्य, संगीत और चित्रकला का समन्वय संसार भर की कलाओं में एक अद्वितीय उपलब्धि है। पहाड़ी साहित्य और संस्कृति का गौरवमयी अस्तित्व भारत में ही नहीं वरन् विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आर्चर ने पहाड़ी संस्कृति की विशेषता को इंगित करते हुए कहा है ''पहाड़ी लोगों पर सिख, अफगान, मुगल, पठान आदि ने आक्रमण किए तथा उन पर दबाव डाला, लेकिन यहां के शासक सदा ही अपनी संस्कृति और साहित्य को संजोये रहे हैं व अंत तक उसे सुरक्षित रखे रहे हैं। चीन और जापान में भी हमें काव्य और चित्रकला के समन्वय का पता चलता है लेकिन पहाड़ी चित्रकला में तो काव्य, संगीत और चित्रकला के सुखान्त समन्वय के पीछे भारतीय संस्कृति का अत्यंत समृद्ध दर्शन है। डॉ. एम.एस.रंधावा के शब्दों में काव्य को चित्रकला में रूपान्तर ही कांगड़ा कला का अद्वितीय गुण है। काव्य की पीठिका में प्रवाहमान, लयात्मक रेखाओं ने कांगड़ा कला को गेयता दी है। सहज ही शांत संगीत कहा जा सकता है कि यह वह कला है जो मन को सुखकर प्रतीत होती है और आत्मा को ऊँचा उठाती है।

पहाड़ी चित्रकला के नाम से ही पता चलता है कि यह कला भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में पल्वित और विकसित हुई है। पहाड़ी शैली में अनेक उप–शैलियाँ प्राप्त

होती है जिसमें से काँगड़ा और बसोहली मुख्य स्थान रखती है। इसी के साथ–साथ गुलेर, चम्बा, नरपुर, विलासपुर इत्यादि शैलियाँ भी प्राप्त होती है और जो अब सामूहिक रूप से पहाड़ी चित्रकला शैली के रूप मे जानी जाती है। पहाड़ी शैली के चित्रों में मुख्य रूप से प्रेम, रस और सौन्दर्यता ही दृष्टिगोचर होती है। इसी के साथ–साथ द्वितीय चरण में पहाड़ी लघु चित्रों में कांगड़ा शैली के उद्‌भव एवं विकास का वर्णन किया है। कांगड़ा शैली महाराजा संसार चंद (1765 –1823 ई॰) के संरक्षण में पहाड़ी चित्रकला का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। कांगड़ा शैली के लघु चित्र नाजुक, कोमल व बहुत आधिक भावपूर्ण है। जिससे इनमें एक मौलिक एकता दिखायी देती है।

कांगड़ा के इतिहास में सन् 1775 से 1823 ई. तक का समय स्वर्णिम रहा। राजा संसार चंद वैष्णव धर्म सौंदर्यमयी रेखाओं व रंगों में व्यक्त किया। सशक्त रूप से पश्चिमी हिमालय के चितेरों ने विशेषकर कांगड़ा के चित्रकारों ने किया। जयदेव द्वारा लिखित गीत गोविंद, बिहारी सतसई और भगवत् पुराण में भी कृष्ण जीवन की बहुविध लीला अत्यंत नयनाभिराम ढंग से प्रस्तुत की गई है। उसी समय केशवदास लिखित कविप्रिया, रसिकप्रिया एवं नल–दमयन्ती की प्रणय कथा पर भी चित्र कार्य हुआ। प्रेम का ऐसा भावमय, लयात्मक और कलात्मक चित्रण को देखकर कला समीक्षक डॉ. आनन्द कुमार स्वामी ने लिखा था कि जो प्रसिद्धि चीनी कलम में प्राकृतिक सौंदर्य चित्रण में प्राप्त हुई वही यहां प्रेम के चित्रण में एक उपलब्धि बन गई है।

जयदेव के गीत–गोविन्द, बिहारी सतसई, केशवदास व मतिराम की रचनाओं व भगवत् पुराण से प्रेरित चित्रकारों ने थोड़े ही समय में हजारों की संख्या में चित्र बनाकर एक चमत्कार कर दिखाया। राग–रागिनियों, नायक–नायिका भेद तथा समस्त श्रृंगारिक कियायें पहाड़ी कलम की उभरती देह–यष्टि में समाई हुई थी। रेखाओं की कोमलता व एक नये तल–विन्यास ने पहाड़ी कलम को मौलिकता प्रदान की है। नल–दमयन्ती की कथा भारत के महाकाव्य महाभारत मे आती है। युधिष्ठिर को जुए में अपना सब कुछ गवा कर अपने भाइयों के साथ वनवास करना पड़ा। वहीं एक महर्षि बृहदश्रव ने उन्हें नल और दमयन्ती की कथा सुनायी महाभारत का नलोपाख्यान इस महाकाव्य का मूल आधार है। पहाड़ी शैली के नल–दमयन्ति चित्रों में इन दोनो कलाओ का निजस्व एंव के अनुयायी और कृष्ण भक्त थे। वैष्णव भक्ति ने शीर्ष ही काव्य का शक्तिशाली रूप ग्रहण कर लिया। राजा के चित्रकारों ने कृष्ण लीला जैसे विषय को अपनी भरपूर रूचि–शुचि के अनुकूल चित्रित किया। कृष्ण से बढ़कर नायक उनकी दृष्टि में और कोई नहीं था यही कारण है कि समस्त पहाड़ी कलाकृतियों में कृष्ण ही छाये रहे। कृष्ण संबंधी अनेक कांगड़ा शैली के संसार भर के संग्रहालयों में देखे जा सकते हैं।

इस समय भक्ति आंदोलन अपनी उत्कृष्टता पर था। काव्य में स्थितियों के प्रमुख नायक कृष्ण थे। कवियों ने श्रृंगारिक रूप से सुंदर कृतियों की रचनस कर डाली तथा सुन्दर चित्रात्मक वर्णनन ने चित्रकारों को जबरदस्त प्रेरणा दी। शीघ्र ही यह धार्मिक कवितायें चित्रकारों के हाथ से सुंदर रूप ग्रहण करने लगी। इस भक्ति भाव को

दर्शक को रसान्वित करने हेतु एक दूसरे से परस्पर सामंजस्य एंव सहयोग की प्रकृति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जो भारतीय चित्रण परम्परा की उत्कृष्टता है। भारतीय कला में धर्मिक महापुरूषों के जीवनवृत्तों को आधार बनाकर चित्रण की परम्परा प्रचीनकाल से चली आ रही है। अनेक ताड़पत्रीय बौद्ध और जैन सचित्र ग्रंथ तथा संस्कृत एवं हिन्दी के विभिन्न महाकाव्यों व ग्रन्थों का चित्रण चित्रकला की इसी परम्परा का द्योतक है।

The Conversation of Nala-Damayanti-

इस चित्र में पूरे धरातल का प्रयोग चित्रकार ने बहुत ही सौंदर्यात्मक रूप से किया है। कलात्मक दृष्टिकोण से मुख्य आकृतियों को बीच में व सहायक आकृतियों को अगल–बगल में संयोजित किया है, जिससे प्रभाविता का तत्व हमें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। चित्रकार ने भाव के अनुरूप शारीरिक भंगिमा को अंकित करने पर विषेष ध्यान दिया है। पुरूष (नल) के मुख पर एक तेज है और नारी (दमयन्ती) के मुख पर मंद–मंद मुस्कुराहट प्रकट हो रही है जैसे कोई नई नवेली दुल्हन सिर पर पल्ले की आड़ में पहली बार अपने प्रीतम को चोरी छुपे देख रही हो, शरीर में कम्पन और श्वास में तेजी दोनों हैं तथा सखियां घड़ी–घड़ी छेड़ रही हैं। आकृतियां अनुपात में हैं और सुतंलित भी और यही संतुलन हमें वर्ण में भी देखने को मिलता है। लयबद्ध रेखांकन व उच्च संयोजन कर चित्र अधिक सुंदर व रसोत्पादक हो उठा है।

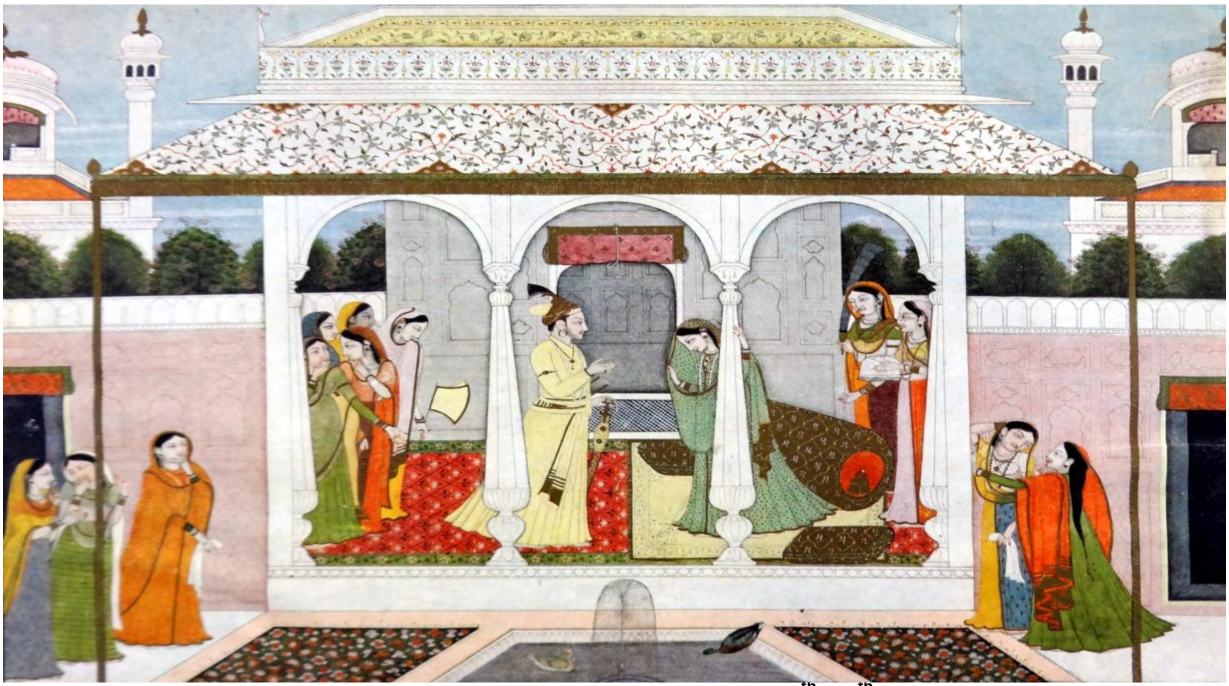

Figure1. The Conversation of Nala- Damayanti, 17th- 18th Century, Jammu Museum

The Swan speaks again to Nala-Damayanti

इस चित्र में पूरे धरातल का प्रयोग करते हुए चित्रकार ने परिप्रेक्ष्य पर अधिक ध्यान दिया है। पीछे की आकृतियों और इमारत को अधिक छोटा बनाया गया है मुख्य आकृति की तुलना में, जिससे कलाकार के ज्ञान और कौषल का ज्ञात होता है। धरातल पर पूर्ण कथानक के संयोजन को अर्ध–वृत्ताकार में बनाया गया है, जो कि रेखा, रूप और वर्ण में एकता स्थापित कर रहा है। प्रवाही व सरल रेखा और वर्ण के माध्यम से चित्र में माधुर्य एवं लावण्यता से परिपूर्ण प्रेमी युगल को चित्रित किया है। आकृतियां एक दूसरे से बंधीं हैं। सभी आसमसन में उड़ते हुए हंस को देख रहे हैं जो इस चित्र के कथानक को स्पष्ट करता है। रंग संयोजना पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है। सफेद, हल्के नीले जैसे कोमल रंगों के साथ नारंगी, हरा, पीला और लाल जैसे विरोधी रंगों का संयोजन किया है। चित्र में उच्च आवृत्ती के साथ–साथ उकता और सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करता है। चित्रकारों ने रेखाओं और रंग को तुलिका के माध्यम से इन चित्रों में आत्मा को प्रतिष्ठित कर दिया है। इन चित्रों के अंकन में कलाकार ने शैलीगत विशेषता से कथा की आत्मा को स्पष्ट करते हुऐ नल–दमयन्ती की भावभूमि को उभारने का एक सफल प्रयत्न किया है।

Figure 2 the Swan speaks again to Nala- Damayanti, 17th- 18th Century, Jammu Museum

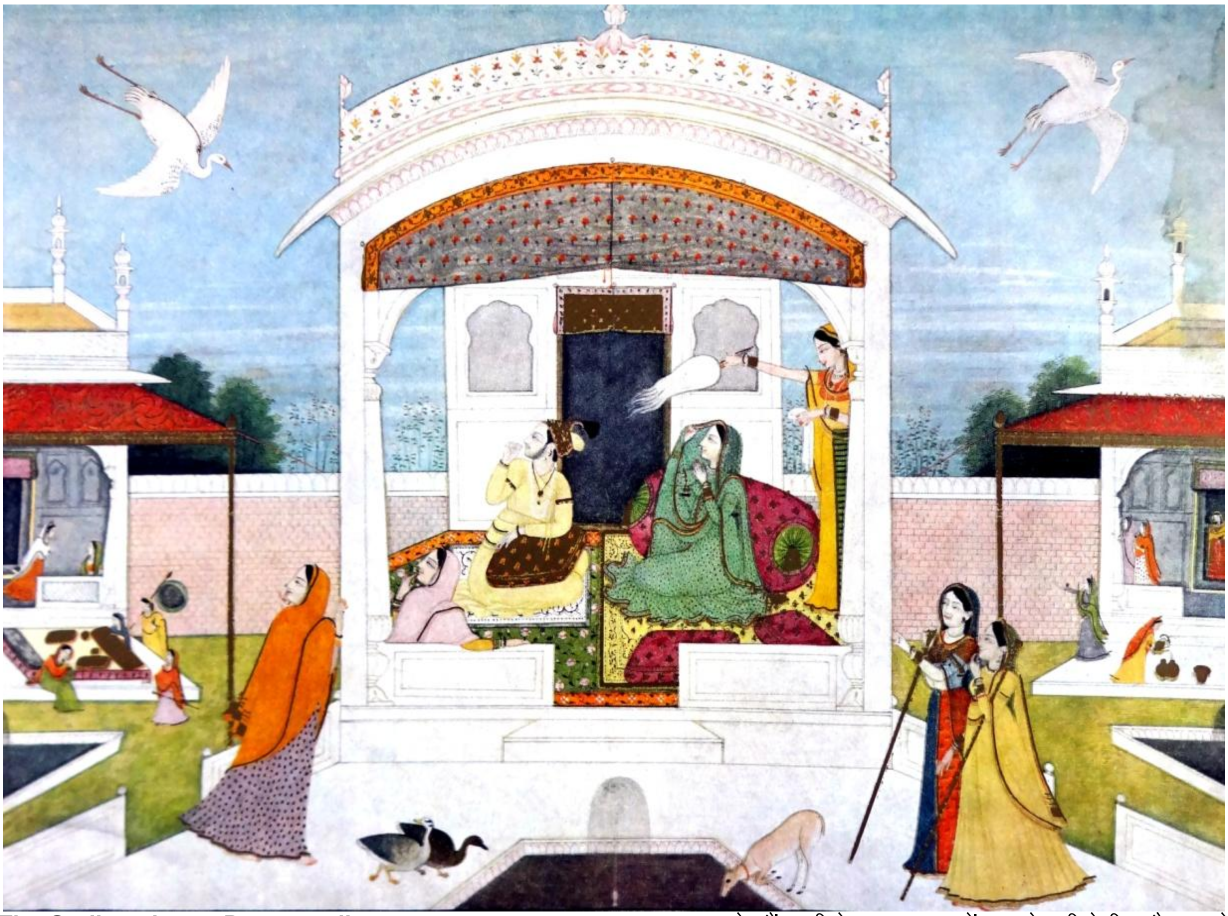

The God's going to Damayanti's swayamwara

सौंदर्यात्मक दृष्टि से कलाकार ने कलाकृति को सौंदर्य के तत्वों द्वारा संयोजित किया है। पूर्ण धरातल का प्रयोग और आकृतियों तथा पषुओं की पुनरावृत्ति कर चित्र के कथानक को दर्षाने का पूर्ण प्रयास किया है, जिसमें देवलोक के सभी देवता दमियन्ती के स्वयंवर में जाने के लिए उत्साहित दिखाई प्रतीत हो रहे हैं। सभी देवता अपने–अपने वाहनों पर आसमान में बादलों की आड़ में उड़ रहे हैं। नीले आसमान में हल्के सीलेटी और सफेद बादलों पर उष्ण, चमकीले रंग के वस्त्र धारण किए देवताओं तथा उनके दूतों का चित्रण किया है। जिस प्रकार शीतल रंगों के द्वारा दूरी व उष्ण रंगों के द्वारा निकटता का आभास हो रहा है इसी प्रकार यह आभास उक्त चित्र में पीले रंग के पहाड़ में दृष्टिगोचर होता है। साथ ही चित्र में सामंजस्य तथा अनुपात का प्रभाव उत्पन्न हो रहा है।

Figure 3. The God's going to Damyanti's Svayamwara, 17th- 18th Century, Jammu Museum.

Damayanti receiving a gift from God Indra

कांगड़ा में प्रेम व श्रृंगार की भावना कलाकारों की मुख्य प्रेरणा थी। इसी कारण से यह विषय–वस्तु हमें हर चित्र में देखने को मिलती है। कथानक के अनुसार जहां दमयन्ती अपने विवाह को लेकर परेषान और असमंजस में थी, वहीं देव इन्द्र के उपहार से वह खुष है और वही भाव दमयन्ती के चेहरे पर दृष्टवय है। आकृतियों की संख्या में अधिकता कदखाई गई है जिससे पुनरावृत्ति को देखा जा समता है। रंगों में विरोध व लयात्मक रेखायें उचित रूप से संयोजित की गई हैं। स्थापत्य में सफेद रंग के प्रयोग से आकृतियों में उष्ण रंग की मुख्यता को सौंदर्यपूर्ण रूप से दर्षाया गया है।काव्य का चित्रकला में रूपांतर ही संयोजन के तत्वों के साथ कांगड़ा शैली का अद्वितीय गुण है। काव्य की पीठिका में प्रवाहमान, अनुपात, संतुलन व लयात्मक रेखाओं ने कांगड़ा कलम को गति दी है। इन चित्रों को देखकर सहज ही मधुर संगीत कहा जा सकता है। काव्य आधारित चित्रण की इस भारतीय परम्परा का सीधा अर्थ यह है कि जो स्थिति और भावाभिव्यंजना कवि शब्दो के मध्यम से प्रकट करता है, इसके पठन श्रवण तथा मनन से सहृदय बोध ग्रहण कर वस्तु निसृत रस को अंगीकार करता है, वही काव्य सापेक्ष चित्रण के उपरान्त दर्शनमात्र से प्रेक्षक के मन में वही भाव व रस सत्ता को अंगीकार कराने की सामग्री प्रदान करता है। यह वह कला है जो मन को सुखकर प्रतीत होती है और आत्मा को ऊँचा उठाती है।

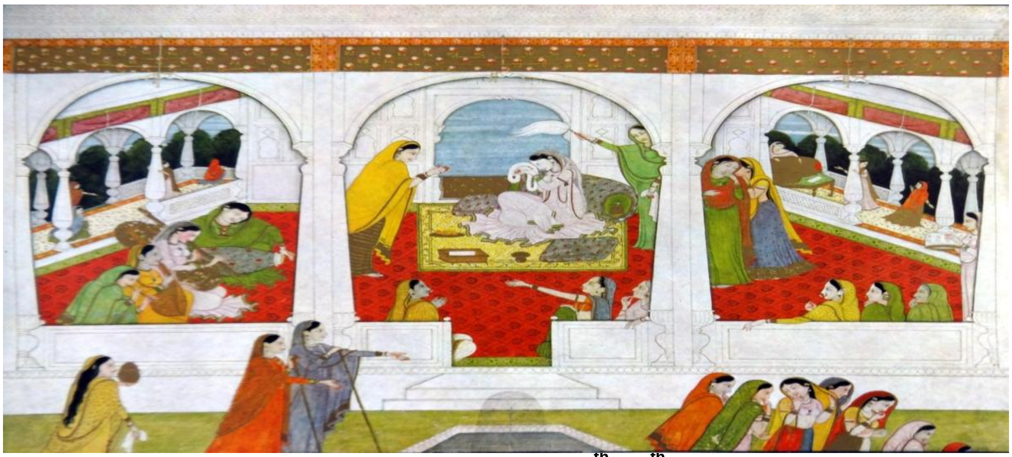

Figure 4. Damayanti receiving a gift from Indra, 17th- 18th Century, Jammu Museum

निष्कर्ष

अन्त मे **उपसंहार** में भारतीय लघुचित्रों मे नल–दमयन्ती चित्रों के विषयगत महत्व को स्पष्ट किया गया है। आज युग मे मानवमूल्यो के साथ कला के प्रति दृष्किोण भी बदल गया है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण आज भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक यह चित्र अन्धकार की गर्त में तिरीहित होते जा रहे है, अतः आज इन अमूल्य धरोहरो को ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय एवं कलात्मक अध्ययन करना आवश्यक है।

लेखक की आशा है कि उसके इस लघु प्रयास से विद्वानों, कला अध्येताओ एवं जिज्ञासुओं को इन कांगड़ा शैली मे चित्रित नल–दमयन्ती चित्रों के वैभव का न सिर्फ पूर्ण परिचय प्राप्त होगा अपितु इन चित्रों के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पक्षों से भी वह अवगत हो सकेंगे। यही इस शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Goswamy, B.N. - 1975, Pahari Paintings of The Nal Damayanti Theme, National Museum, New Delhi.*
2. *Archer, W.G. - 1953, Kangra Painting, London, 1952, Indian Painting in Punjab Hills, London, 1961, Indian Miniatures, New York.*
3. *Randhawa, M.S.– 1954, Kangara Valley Painting, National Museum, New Delhi, 1963, Kangra, Sahitya Academy, New Delhi.*
4. *Khandalvala, Karl - 1958, Pahari Miniatures Painting, Bombay.*
5. *Ohri, Vishwa - 1991, On the origins of Pahari painting, Shimla Indian*
6. *Chandra Institute of advanced study.*
7. *Rahi, Onkar - 2013, Growth & Tradition of Pahari Miniature Painting, National Publishing House, Delhi.*
8. *Gupta, Sonali - 2017 Synopsis वद कांगड़ा लघु चित्रों में नल–दमयन्ती का सौंदर्यात्मक विवेचन] Dayalbagh Educational Institute, Agra*